[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3415

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वर्तमान समयानुसार संगीत पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता

यक्षिता वर्मा
शोध छात्रा (संगीत विभाग)
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

संगीत सभी ललित कलाओं में श्रेष्ठ कला है। यह मानव मन की भावना की उत्कृष्ट कृति है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप में प्रकट करता है। संगीत अखण्ड एवं अनन्त है। संगीत अपने समाज व संस्कृति का दर्पण होता है। इसलिए संगीत मानवतावाद का पोषक है एवं अनन्त है। इसलिए **संगीत से विश्वकुटुम्बकम** (पूरा विश्व एक परिवार) की भावना का विकास होता है जिससे सभ्य समाज का निर्माण होता है। संगीत की परिभाषा पं. शारंगदेव ने अपने ग्रंथ संगीत ररत्नाकर में इस प्रकार दी है ''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्येते।

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''मनुष्य की अर्न्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। आज के बदलते परिवेश में शिक्षण संस्थाओं में संगीत की शिक्षा प्रदान करने का जो वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है उसके प्रमुख सोपान छात्र, शिक्षक, शिक्षण पद्धति, प्रशासन एवं संगीत विषय की परीक्षा प्रणाली है।

शिक्षा की भांति ही कला भी मानव जीवन के विकास के लिए अति आवश्यक है। कलाएँ हमारी सौन्दर्यानुभूति में वृद्धि कर सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि करती हैं। संगीत ऐसी कला है जिसे आधुनिक समय में अन्य विषयों की भांति अध्ययन, अनुसंधान एवं अध्यापन हेतु अलग विषय के रूप में मान्यता प्राप्त है। संगीत की शिक्षा आज विद्यालय व विश्वविद्यालयों में दी जाने लगी है। किन्तु संगीत शिक्षा का जो रूप प्राचीन काल में गुरू–शिष्य परम्परा के रूप में प्रचलित था। वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में भिन्न–2 रूप में देखने को मिलता है।

किसी भी विषय को सुचारू रूप से पढ़ाये जाने हेतु शिक्षण संस्थाओं में पाठ्यक्रम को आधार बनाया जाता है। पाठ्यक्रम ही शिक्षक द्वारा छात्र को पढ़ायी जाने वाली विषय–वस्तु का आधार मानी जाती है। संगीत विषय में मुख्य रूप से विद्यार्थी को **स्वर, ताल** से युक्त कतिपय रागों व धुनों को सीखाया जाता है। वर्तमान समय में संगीत शिक्षण का कार्य सुचारू रूप से किया जाए, इसमें पाठ्यक्रम की अहम भूमिका होती है।

'पाठ्यक्रम' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। **'पाठ्य'** जिसका अर्थ है पढ़ाया जाने योग्य और **'क्रम'** का अर्थ है आरम्भ। नियमित व्यवस्था, सिलसिला अर्थात् शैक्षिक विषय वस्तु को नियमित या व्यवस्थित क्रम में पढ़ाने की व्यवस्था पाठ्यक्रम कहलाती है।

''पाठ्यक्रम'' को अंग्रेजी में 'करिकुलम' कहा जाता है। यह लैटिन भाषा का शब्द है जिसे दौड़ का मैदान कहते हैं। अतः पाठ्यक्रम ही वह आधार है जिसपर विद्यार्थी की व शिक्षक की सम्पूर्ण क्रियाएँ निर्भर करती हैं। विद्यार्थी के बौद्धिक स्तर पर योग्यता क्षमताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। उक्त विचार से यह स्पष्ट होता है कि 'पाठ्यक्रम' बहुत महत्वपूर्ण होता है और पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास करना एवं उसके व्यवहार में परिवर्तन लाना है। इसलिए पाठ्यक्रम को बदलते समय के अनरूप बदलते रहना चाहिए। जिससे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके और भविष्य में किसी समस्या के समाधान के लिए मानसिक रूप से तैयार हो सके।

पाठ्यक्रम को वर्तमान समयानुसार बदलने की आवश्यकता –

युग परिवर्तन के साथ परिस्थितियों के अनुरूप आज संगीत शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम की परिकल्पना को परिवर्तित करना अति आवश्यक है। इसमें कोई संदेह नहीं है, किन्तु यह भी सत्य है कि उच्च उपाधियाँ प्राप्त विद्यार्थी बेरोजगार हैं या कहा जाए कुछ भी कार्य करने में समर्थ नहीं है। अनेक वर्षों की शिक्षा के बाद भी जीविकोपार्जन में असफल होते दिखाई दे रहे हैं। इस समस्या का दायित्त्व उन शिक्षकों, विद्वानों तथा उन समितियों का है जो संगीत पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं।
आज आवश्यकता इस बात की है कि संगीत शिक्षा को नियत समयावधि में न बांधकर हर वक्त हर जगह तैयार रहने की मानसिकता शिक्षकों की होनी चाहिए। पाठ्यक्रम पूरा करने के साथ–साथ संगीत के विद्यार्थियों को संगीत की सूक्ष्म शिक्षा

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

देनी होगी जिससे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान विद्यार्थियों को हो सके साथ ही विद्यार्थियों के आंतरिक गुणों का विकास हो सके जिससे भविष्य में विद्यार्थियों को समस्याओं का सामना करना पड़े। पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता को हम निम्न रूप में देख सकते हैं।

पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयवस्तु संबंधी बदलाव की आवश्यकता –
वर्तमान पाठ्यक्रम के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि संगीत पाठ्यक्रम **रोजगारन्मुखी** नहीं है। आज सभी स्तर के पाठ्यक्रम में अधिक से अधिक 'राग' सिखाने पर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों की रूचि, योग्यता, अभिवृत्ति व संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष पर कम ध्यान दिया जाता है। जैसे पाठ्यक्रम में यह प्रावधान होता है कि किन्हीं दो रागों में बड़ा ख्याल व अन्य रागों में छोटा ख्याल अथवा द्रुत गत एवं एक ध्रुपद, धमार या धुन सीखायी जाए।

किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि संगीत के पाठ्यक्रम में भले ही एक वर्ष में कम रागे ही सिखायी जाएँ किन्तु उन्हें विस्तार पूर्वक संगीत की तकनीक के साथ सिखाया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को रागों के असली स्वरूप व बारिकियों का ज्ञान हो सके। क्रियात्मक व सैद्धान्तिक पक्ष की शिक्षा दी जानी चाहिए। संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में संगीत निर्देशन, फिल्म संगीत, वाद्यवृन्द, वृन्दगान, विभिन्न वाद्यों पर संगीत बंदिशों की रचना करना आदि कार्यों को सीखाने, ज्ञान देने का प्रावधान किया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में संगीत के कार्यक्रमों की **रिकॉर्डिंग** संबंधी जानकारी दी जानी चाहिए **सांगीतिक कार्यक्रमों की एडिटिंग** करने जैसे कार्य विद्यार्थियों को सिखाये जाने चाहिए जिससे विद्यार्थी को भविष्य में अनेक कार्य करने का मार्ग प्रशस्त हो सके। साथ ही आज के युग में विज्ञापनों का विशेष महत्व एवं प्रचलन हो रहा है। इसलिए विद्यार्थियों को विज्ञापनों में कैसे संगीत का प्रयोग किया जाता है, विश्वविद्यालयी स्तर पर सीखाया जाना चाहिए। इन बातों को ध्यान में रखकर यदि संगीत पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाएगा। तो विद्यार्थी उपाधि प्राप्त करने के बाद स्वतन्त्र रूप से अपना **जीविकोपार्जन** कर सकेगा।

पाठ्यक्रम का निर्माण स्तरानुकूल किये जाने की आवश्यकता –
संगीत शिक्षा के लिए यह अति आवश्यक है कि पाठ्यक्रम विद्यार्थी के स्तर को ध्यान में रखकर 'चयन व श्रेणीकरण' के सिद्धान्त के आधार पर बनाया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थी सरल से जटिल विषय को समझने की योग्यता विकसित कर सके। प्रारम्भिक स्तर पर अलंकार, स्वर नाद भजन, राष्ट्रगीत रखे जाएँ उसके पश्चात् जैसे–जैसे स्तर बढ़े रागों की शिक्षा दी जानी चाहिए। पहले थाट के राग पाठ्यक्रम में रखे जाएँ जैसे यमन, बिलावल, काफी, खमाज तत्पश्चात् स्तर पढ़ने पर अंगों पर आधारित जैस मल्हार अंग, कौंस अंग, भैरव अंग आदि रागौ को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

मूल्यांकन में बदलाव की आवश्यकता –
वर्तमान समय में शिक्षा का मूल्यांकन परीक्षाओं से किया जाता है। आज समसत्रीय परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है जिसे संगीत विषय में भी लागू कर दिया गया है किन्तु शिक्षण संस्थाओं को इस तथ्य पर विचार कर वार्षिक मूल्यांकन को रखा जाना चाहिए। क्योंकि समसत्र होने के कारण शिक्षक व विद्यार्थी मात्र पाठ्यक्रम पूरा करना अपना ध्येय समझते हैं जिससे संगीत की बारीकियाँ, तकनीक सही रूप में विद्यार्थी नहीं सीख पाते। परीक्षा प्रणाली को ध्यान में रखकर शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के स्थान पर अनुकरण करने पर बल दिया जाता है और रागों में बंधे हुए आलाप, तान सिखाने की प्रवृत्ति अपनाई जाती है जिससे संगीत की गुणवत्ता में कभी आती है इसलिए इस व्यवस्था को बदलना चाहिए।

सभी स्तरों पर पाठ्यक्रमों में एकरूपता लाने की आवश्यकता –
वर्तमान में सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में समानता न होने के कारण किसी विशेष विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थी को अन्य विश्वविद्यालयों एवं उन विश्वविद्यालयों से मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्यापन करके समय कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का संगीत पाठ्यक्रम अधिक विस्तृत नहीं रखा जाना चाहिए। क्योंकि स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों को संगीत के साथ अन्य विषय भी पढ़ाये जाते हैं। इसलिए स्नातक स्तर पर संगीत के पाठ्यक्रम में रागों की संख्या कम रखी जानी चाहिए।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पाठ्यक्रम में संगीत के सभी रूपों (शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, आदिवासी संगीत आदि) की शिक्षा का समावेश किया जाना चाहिए।

स्नातकोत्तर स्तर पर सुगम संगीत को अलग से विषय के रूप में रखा जा सकता है। क्योंकि आज के युग में शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ सुगम संगीत भी अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है। इसलिए ''सुगम संगीत को भी यथोचित स्थान मिलना समय की मांग है।

एम.ए. स्तर पर भी संगीत पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता है। इस स्तर पर विद्यार्थी स्वतन्त्र रूप से केवल एक ही विषय पर अध्ययन करता है इसलिए इस स्तर पर पाठ्यक्रम को नीरस व बोझिल नहीं बनाया जाना चाहिए। संगीत के सभी पक्ष मनोविज्ञान, इतिहास, समाज, धर्म, सभी का ज्ञान विद्यार्थियों को करवाया जाना चाहिए।

एम.फिल. स्तर पर विद्यार्थी को प्रायोगिक शिक्षा के साथ संगीत संबंधी किसी वाद–विवाद पर अपने विचार प्रकट करने की योग्यता विकसित करने हेतु सेमिनार व वर्कशॉप का प्रावधान पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिए।

संगीत शिक्षक बनने हेतु जिन योग्यताओं का होना आवश्यक है उन योग्यताओं का विकास करने हेतु संगीत–शिक्षण की विधि, प्रविधियों को पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिए। अलग से ज्मंबीपदह का च्वमत रखा जाना चाहिए जिससे उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थी सफल संगीत शिक्षक बनने योग्य हो सके। साथ ही विद्यार्थी को शोध कार्य करने हेतु प्रशिक्षित भी किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष रूप में यदि यह कहा जाए कि वर्तमान संगीत पाठ्यक्रम की परिकल्पना को बदलना अति आवश्यक है तो कोई अतिश्योक्ति ना होगी। संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में शास्त्रीय संगीत शिक्षण के साथ–साथ विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के आधार पर **संगीत रचनाकार, निर्देशक, विडियो निर्माता, समीक्षक, आलोचक, वाद्य निर्माता, वाद्य मरम्मत तकनीक, कलाकार, व्याख्याता, शिक्षक** आदि बनाने की योग्यता विकसित कराने के उद्देश्य से बनाया जाना चाहिए। जिससे संगीत शिक्षण में जो समस्याएँ सामने आ रही है जैसे **विद्यार्थियों का संगीत विषय से अलगाव, विद्यार्थियोंका अनुपस्थित होना, मात्र उपाधि प्राप्त करने हेतु शिक्षा लेना या बेरोजगार हो जाना आदि समस्याओं का निदान संभव हो सकेगा। उक्त समस्याओं के समाधान के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता है।**

सन्दर्भ –

1 *डॉ. दत्ता पूनम, ''भारतीय संगीत'', शिक्षा और उद्देश्य*
2 *डॉ. शर्मा पुष्पेन्द्र, ''संगीत की उच्चस्तीय शिक्षण प्रणाली'', एक समीक्षात्मक अध्ययन (हरियाणा)*
3 *श्रीमती उप्पल सविता, ''संगीत शिक्षण और मनोविज्ञान।''*
4 *संगीत मासिक पत्रिका लेख – ''विश्वविद्यालयी संगीत का पाठ्यक्रम दशा एवं दिशा'', मई 2011*